Bio Vet Innovator Magazine

Volume 2 (Issue 12) DECEMBER 2025

OPEN ACCESS POPULAR ARTICLE

विकसित भारत में मांस उत्पादन एवं व्यवसाय की भूमिका

डॉ. शिवानी सिंह, डॉ. अमित सिंह विशेन

[1]पीएचडी स्कॉलर, पशु चिकित्सा एवं पशुपालन विस्तार विभाग, पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय (DUVASU), मथुरा, U.P.

[2]सहायक प्राध्यापक, पशु शरीर रचना विज्ञान विभाग, पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय (RLBCAU), दतिया, M.P.

***Corresponding Author:** amitvishen56@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18158916

Received: December 27, 2025
Published: December 31, 2025

© All rights are reserved by **अमित सिंह विशेन**

प्रस्तावना:

विकसित भारत के निर्माण में पशुपालन एवं उससे जुड़े उपक्रमों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल कृषि क्षेत्र का एक अभिन्न अंग है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ भी है। पशुपालन के माध्यम से दूध, मांस और अंडों जैसे प्रमुख उत्पाद प्राप्त होते हैं, वहीं ऊन, खाल, खाद एवं अन्य उप-उत्पाद भी ग्रामीण आय में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। यह क्षेत्र देश की खाद्य एवं पोषण सुरक्षा को सुदृढ़ करने के साथ-साथ रोजगार सृजन में भी अहम भूमिका निभाता है।

पशुपालन एवं सहायक उपक्रमों का योगदान:

पशुपालन एवं डेयरी विभाग द्वारा प्रति पशु उत्पादकता में सुधार हेतु अनेक महत्वपूर्ण पहल की गई हैं। उत्पादकता में वृद्धि से न केवल घरेलू मांग की पूर्ति होती है, बल्कि निर्यात क्षमता भी बढ़ती है। डेयरी, मांस उत्पादन, चारा उत्पादन, पशु चिकित्सा सेवाएँ तथा प्रसंस्करण उद्योग जैसे सहायक उपक्रम पशुपालन क्षेत्र को मजबूती प्रदान करते हैं। नई तकनीकों एवं वैज्ञानिक प्रबंधन पद्धतियों को अपनाने से इस क्षेत्र में गुणवत्ता एवं उत्पादकता दोनों में निरंतर सुधार हो रहा है।

भारत में मांस उत्पादन की स्थिति

एक शोध के अनुसार, भारत में वार्षिक मांस उत्पादन लगभग **6.3 मिलियन टन** आंका गया है, जिससे भारत उत्पादन की दृष्टि से विश्व में **पाँचवें स्थान** पर है। भारत विश्व के कुल मांस उत्पादन में लगभग **3 प्रतिशत** का योगदान करता है। हाल के वर्षों में मांस उत्पादन में निरंतर वृद्धि दर्ज की गई है:

- **2023–24**: 10.25 मिलियन टन (पिछले वर्ष की तुलना में 4.95% वृद्धि)
- **2022–23**: 9.77 मिलियन टन (5.13% वृद्धि)
- **2021–22**: 9.29 मिलियन टन (5.62% वृद्धि)
- **2020–21**: 8.80 मिलियन टन (3.45% वृद्धि)

वर्ष **2014–15** में 6.69 मिलियन टन उत्पादन की तुलना में पिछले दस वर्षों में औसतन **4.85 प्रतिशत** की वृद्धि दर्ज की गई है।

प्रमुख मांस उत्पादक राज्य

भारत के शीर्ष मांस उत्पादक राज्यों में निम्नलिखित का प्रमुख योगदान है:

- पश्चिम बंगाल – **12.62%**
- उत्तर प्रदेश – **12.29%**
- महाराष्ट्र – **11.28%**

- तेलंगाना – **10.85%**
- आंध्र प्रदेश – **10.41%**

वार्षिक वृद्धि दर (AGR) की दृष्टि से असम (**17.93%**), उत्तराखंड (**15.63%**) और छत्तीसगढ़ (**11.70%**) अग्रणी राज्य रहे हैं।

मांस उत्पादन से संबंधित नीतियाँ

1. वध एवं प्रसंस्करण: घरेलू उपयोग हेतु पशुओं के वध एवं मांस प्रसंस्करण को **भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI)** द्वारा खाद्य सुरक्षा एवं मानक नियम, 2021 के अंतर्गत विनियमित किया जाता है।

2. निर्यात: भारत से मांस निर्यात का नियमन **कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA)** द्वारा किया जाता है। केवल वही मांस निर्यात योग्य होता है, जिसका उत्पादन एवं प्रसंस्करण APEDA-पंजीकृत बूचड़खानों एवं मांस संयंत्रों में अनिवार्य सूक्ष्मजीव विज्ञान एवं गुणवत्ता परीक्षण के उपरांत किया गया हो। भारत मुख्य रूप से जमे हुए बोनलेस (हलाल) भैंस मांस का निर्यात करता है और इस श्रेणी में विश्व में प्रथम स्थान पर है। वर्तमान में लगभग 111 आधुनिक मांस प्रसंस्करण संयंत्र HACCP एवं ISO 22000 प्रमाणीकरण के साथ APEDA में पंजीकृत हैं।

3. आयात: मांस एवं पशुधन उत्पादों के आयात हेतु आयातक को पहले **विदेश व्यापार महानिदेशक (DGFT)** से लाइसेंस प्राप्त करना आवश्यक होता है। आयात को पशुधन आयात अधिनियम, 1898 के अंतर्गत नियंत्रित किया जाता है ताकि विदेशी रोगों के प्रवेश को रोका जा सके। पशु संगरोध एवं प्रमाणन सेवा (AQCS) द्वारा आयातित उत्पादों का समय-समय पर निरीक्षण भी किया जाता है।

4. व्यापार: मांस एवं पशुधन उत्पादों का व्यापार **वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय** द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

पशुधन क्षेत्र के विकास हेतु सरकारी पहल:

2021 में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, पशुपालन एवं डेयरी विभाग की विभिन्न योजनाओं को तीन प्रमुख श्रेणियों में समाहित किया गया है:

1. **विकास कार्यक्रम**
2. **पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण**
3. **इंफ्रास्ट्रक्चर विकास निधि**

इन योजनाओं के अंतर्गत **राष्ट्रीय गोकुल मिशन, राष्ट्रीय पशुधन मिशन, डेयरी विकास कार्यक्रम, राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (NADCP)** आदि शामिल हैं। वर्ष 2021 से 2026 तक पशुधन क्षेत्र के लिए लगभग **1.32 बिलियन डॉलर** का विशेष पैकेज निर्धारित किया गया है।

रोग नियंत्रण एवं भविष्य की दिशा:

मांस निर्यात को बढ़ावा देने में **पैर एवं मुंह की बीमारी (FMD)** एक बड़ी चुनौती रही है। इसे नियंत्रित करने हेतु भारत में विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (WOAH/OIE) द्वारा समर्थित कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, वर्ष 2019 में **राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम** के अंतर्गत 2030 तक FMD एवं ब्रुसेलोसिस के उन्मूलन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

निष्कर्ष

विशाल पशुधन आबादी से संपन्न होने के कारण भारत में मांस उत्पादन एवं व्यवसाय की अपार संभावनाएँ हैं। संगठित ब्रॉयलर एवं मांस उद्योग, जहाँ पशुओं का पालन विशेष रूप से मांस उत्पादन के उद्देश्य से किया जाएगा, भविष्य में इस क्षेत्र की दिशा निर्धारित करेगा। उचित नीतियों, आधुनिक तकनीकों और प्रभावी रोग नियंत्रण के माध्यम से भारत विकसित भारत की संकल्पना में मांस उद्योग को एक सशक्त स्तंभ के रूप में स्थापित कर सकता है।

Citation: डॉ. शिवानी सिंह,डॉ. अमित सिंह विशेन. (2026). विकसित भारत में मांस उत्पादन एवं व्यवसाय की भूमिका. **In Bio Vet Innovator Magazine (Vol. 2, Number 12, pp. 24–25). Bio Vet Innovator Magazine. https://doi.org/10.5281/zenodo.18158916**